ECONOMICS

Prof N. Ram
Assistant Professor
R.B.L.R College
Maharajganj (Siwan)

T.D.C. Part I Economics (Hons)
Paper II Indian Economy
TOPIC - Theory of Demographic Transition
जनसंख्या संबंधी संक्रमण का सिद्धान्त

Ques भारत के विशेष संदर्भ में जनसंख्या संबंधी संक्रमण के सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।

Ans जनसंख्या सम्बन्धी संक्रमण का सिद्धान्त आर्थिक विकास के फलस्वरूप जन्म दर (Birth Rate) एवं मृत्यु दर (Death Rate) में होने वाले परिवर्तनों एवं उनके आपसी सम्बन्धों की व्याख्या करता है। वास्तव में आर्थिक विकास के विभिन्न चरणों में जन्म दर एवं मृत्यु दर में विभिन्नता पायी जाती है जिससे जनसंख्या की वृद्धि दर (Growth Rate of Population) भी अलग अलग होती है। इस सिद्धान्त के अनुसार अपने आर्थिक विकास के दौरान कोई भी अर्थव्यवस्था जन्म दर के दृष्टिकोण से निम्नलिखित चार स्तरों से होकर गुजरती है।

(1) प्रथम स्तर :- उच्च जन्म दर एवं मृत्यु दर (First stage : High Birth and Death Rate) :- प्रथम स्तर में जन्म दर एवं मृत्यु दर दोनों ही अत्यधिक ऊँची रहती है जिससे जनसंख्या में वृद्धि की दर प्रायः स्थायी अथवा नीची रहती है। एक पिछड़ी हुई तथा कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में इस प्रकार के लक्षण पाये जाते हैं। एक पिछड़ी हुई अर्थव्यवस्था मे मृत्यु दर इसलिए ऊँची होती है क्योंकि गरीबी एवं कम आय के कारण लोगों को संतुलित आहार नहीं मिलता है तथा स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सम्बन्धी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होती। इसी प्रकार अशिक्षा सामाजिक एवं धार्मिक अंधविश्वास, बाल विवाह (early marriage) तथा परिवार नियोजन के तरीकों की अनभिज्ञता के कारण पिछड़े देशों में जन्म दर ऊँची होती है। साथ ही कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था की आवश्यकतों भी जन्म दर को ऊँची करने में सहायक होती है क्योंकि इसमें बड़ा परिवार अधिक लाभदायक सिद्ध होता है। पिछड़े देशों में बच्चे कम आयु से ही कृषि कार्यों में अपने माता पिता का हाथ बँटाने लगते हैं तथा बड़े होने पर उनके बुढ़ापे का सहारा होते हैं। साथ ही इन देशों में शिशुओं की मृत्यु दर भी ऊँची (High Rate of Infant mortality) होती है। अतः इन परिस्थितियों

में माता पिता अधिक बच्चे पैदा करना चाहते हैं। इस सम्बन्ध में कोल एवं हूवर (Coale and Hoover) ने ठीक ही कहा है Children contribute at an early age and are the traditional source of security in the old age of Parents. the prevalent high death rates, especially in infancy, imply that such security can be attained only when many children are born।"

लेकिन इन परिस्थितियों में आबादी में वृद्धि की अत्यधिक संभावना होते हुए भी वास्तविक वृद्धि दर कम होती है। इसका कारण यह है कि ऊँची जन्म दर एवं मृत्यु दर एक दूसरे को संतुलित कर देती है जिससे जनसंख्या में वास्तविक वृद्धि की दर अधिक नहीं होती।

(2) द्वितीय स्तर: उच्च जन्म दर एवं तेजी से गिरती हुई मृत्यु दर (High Birth Rate and Rapidly falling death Rate):- उच्च जन्म दर एवं तेजी से गिरती हुई मृत्यु दर जब किसी देश की अर्थव्यवस्था विकास की ओर उन्मुख होती है तो मृत्यु में तेजी से कमी होने लगती है लेकिन ऊँची जन्म दर प्रायः ज्यों की त्यों रह जाती है जिससे जनसंख्या में तीव्र वृद्धि होती है। चूंकि इस स्तर पर जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ती है अतः इस स्तर को जनसंख्या के विस्फोट (Population Explosion) का स्तर भी कहते हैं। इस अवस्था में आर्थिक विकास के कारण लोगों की आय बढ़ती है जिससे उन्हें अधिक मात्रा में पौष्टिक भोजन, वस्त्र एवं आवास की सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं। साथ ही चिकित्सा सम्बन्धी सुविधाओं का भी विस्तार होता है। इन सभी कारणों से मृत्यु दर में तेजी से कमी होती है। लेकिन जन्म दर को प्रभावित करने वाले कारणों जैसे शिक्षा, सामाजिक एवं धार्मिक रीति रिवाज, परिवार के आकार के प्रति दृष्टिकोण आदि में बहुत धीमी गति से परिवर्तन होता है जिससे जन्म दर प्रायः ज्यों की त्यों रह जाती है और उसमें थोड़ी कमी भी आती है तो वह नगण्य होती है। इस प्रकार उच्च जन्म दर को प्रायः स्थायी रहने तथा मृत्यु दर में तेजी से कमी होने के कारण जनसंख्या भी तेजी बढ़ती है। अतः प्रथम स्तर की जनसंख्या वृद्धि की उच्च संभावनाएँ दूसरे स्तर में अत्यधिक वास्तविक वृद्धि के रूप में प्रकट हो जाती है।

(3) तृतीय स्तर: गिरती हुई जन्म दर एवं मृत्यु दर (Falling Birth and Death Rate):- इस स्तर में मृत्यु दर में और अधिक कमी होती है लेकिन साथ ही साथ जन्म दर में भी कमी होने लगती है।

लेकिन चूंकि जन्म दर की तुलना में मृत्यु दर में अधिक तेजी से कमी होती है अत: इस स्तर में भी जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होती है। लेकिन इस स्तर तक पहुँचते पहुँचते पारिवारिक सम्बंधों का महत्व घटने लगता है तथा परिवार एवं प्राचीन विचारों तथा सामाजिक एवं धार्मिक रीति रिवाजों के प्रति लोगों का दृष्टिकोण बदलने लगता है क्योंकि कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था औद्योगिक अर्थव्यवस्था में परिणत होने लगती है और जनसंख्या गाँवों से नगरों एवं शहरों की ओर जाने लगती है। यहाँ स्मरणीय है कि तृतीय स्तर केवल उन लक्षणों की ओर संकेत करता है जिससे अर्थव्यवस्था द्वितीय स्तर से चतुर्थ स्तर एवं अंतिम स्तर में पहुँचती है। अत: इस स्तर को द्वितीय स्तर का ही एक भाग जा सकता है क्योंकि इस अर्थव्यवस्था में भी जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होती है यही कारण है कि कुछ लोग तृतीय स्तर को एक अलग स्तर नहीं मानते।

(4) चतुर्थ स्तर: निम्न जन्म दर एवं मृत्यु दर (Low Birth and Death Rate): — इस स्तर में जन्म दर में और अधिक कमी होने लगती है और जब यह पहले से ही नीची मृत्यु दर के करीब पहुंचती है तो जनसंख्या में वृद्धि की गति बहुत धीमी पड़ जाती है। इस अवस्था में उद्योग धन्धों का तेजी से विकास होता है और जनसंख्या रोजगार के लिए गाँवों से शहरों की ओर जाने लगती है। शहरी जनसंख्या में वृद्धि के कारण आवास की कमी होने लगती है और जीवन लागत (Cost of living) में होती होती है जिससे औरतें भी रोजगार में लग जाती है। इस प्रकार शहरी जनसंख्या में वृद्धि, आवास की कमी, जीवन लागत में वृद्धि तथा औरतों के बाहर काम पर जाने के कारण अब बच्चे उत्पादन में सहायक न होकर बोझ बन जाते है और लोग छोटे परिवार के महत्व को समझने लगते है। इस सम्बंध में कोल एवं हुवर ने ठीक ही कहा है "one of the features of economic development is typically increasing urbanisation and children are usually more of burden and less of an asset in an urban setting than in a Rural"

ऐसी अवस्था में लोग जन्म नियंत्रण के विभिन्न तरीकों का प्रयोग करने लगते है जिससे जन्म दर गिरने लगती है। दूसरी ओर मृत्यु दर में हो वाली कमी एक स्तर पर जाकर रुक जाती है क्योंकि मनुष्य मरणशील है जिससे मृत्यु दर में कमी की एक सीमा है। अत: चतुर्थ अवस्था में जन्म दर तथा मृत्यु दर

P T o

में निम्न स्तर पर स्थायी होने की प्रवृत्ति पायी जाती है जिससे जनसंख्या में वृद्धि की गति बहुत ही धीमी होती है अर्थात् जनसंख्या में बहुत कम वृद्धि होती है।

इस प्रकार किसी अर्थव्यवस्था के उच्च जन्म दर एवं मृत्यु दर की अवस्था में पहुँचने के उपरोक्त चार स्तर है। परन्तु ध्यान रखना चाहिए कि जब कोई अर्थव्यवस्था प्रथम स्तर से द्वितीय स्तर में पहुँचती है तो अर्थव्यवस्था में असंतुलन उत्पन्न हो जाता है क्योंकि जन्म दर प्रायः ज्यों की त्यों रह जाती है लेकिन मृत्यु दर में तेजी से कमी होती है जिससे जनसंख्या का विस्फोट होता है। अर्थव्यवस्था में उत्पन्न इस संतुलन को ठीक करने में कुछ समय लगता है जिसे संक्रमण काल कहते है इसलिए इस सिद्धान्त का नाम जनसंख्या सम्बन्धी संक्रमण का सिद्धान्त (Period of transition) कहते है। और इसलिए इस सिद्धान्त का नाम जनसंख्या सम्बन्धी संक्रमण का सिद्धान्त (Theory of Demographic transition) कहा जाता है पड़ा है। संक्रमण काल के बाद अर्थव्यवस्था तीसरे स्तर से होती हुई चतुर्थ स्तर में पहुँचती है जिसमें निम्न स्तर पर जन्म दर एवं मृत्यु दरें संतुलित हो जाती है जिससे जनसंख्या वृद्धि की गति कम हो जाती है। द्वितीय एवं तृतीय स्तरों से अंतिम स्तरों में पहुँचने में अर्थव्यवस्था को कितना समय लगेगा इस सम्बंध में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। यह कई बातों पर निर्भर करता है जिसमें प्रारंभिक जन्म दर सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन की प्रकृति एवं दर, जनता एवं सरकार के दृष्टिकोण आदि प्रमुख है। पश्चिम के कुछ देशों में जन्म दर एवं मृत्यु दर को वर्तमान निम्न स्तर पर आने में प्रायः 30 वर्ष लगे है। लेकिन परिस्थितियों के अनुसार यह अवधि विभिन्न देशों में अलग अलग होगी।

भारत किस स्तर में है? 1921 के पूर्व भारत जनसंख्या सम्बन्धी संक्रमण के प्रथम स्तर में था। उसके बाद से देश में मृत्यु दर में निरन्तर कमी हो रही है लेकिन जन्म दर में प्रायः इस प्रकार की कमी दृष्टिगोचर नहीं हो रही है। अतः वर्तमान समय में भारत जनसंख्या सम्बन्धी संक्रमण के द्वितीय स्तर से गुजर रहा है। यही कारण है कि देश में जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है।

End

N. Ram